



वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 29 8 से 14 अक्टूबर, 2015

दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 आ. कृ. 11

नीदरलैण्ड में 'वैदिक मंदिर' के नाम से

भव्य तथा आकर्षक आर्य समाज मंदिर का निर्माण कार्य शीघ्र होगा प्रारम्भ
देश-विदेश के आर्यजन इस निर्माण कार्य में दिल खोलकर सहयोग प्रदान करें
— स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के उद्घोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को सार्थक करते हुए देश तथा विदेश में आर्य समाज अपने कदम तीव्र गति से बढ़ा रहा है। विदेशों में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों का प्रचार तथा प्रसार करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। विशाल तथा आकर्षक आर्य समाज मंदिरों का निर्माण कराकर समाजोपयोगी गतिविधियों तथा अध्यात्म का सुन्दर समन्वय विदेशों में अपनी विशेष पहचान रखता है। इसी श्रृंखला में दि हेग



आर्य समाज नीदरलैण्ड आसन का प्रारूप

हालैण्ड में आर्य समाज के समर्पित तथा कर्मठ कार्यकर्ता श्री सूर्य प्रसाद वीरे अध्यक्ष, श्री धीरज बदलू कोषाध्यक्ष तथा अन्य सहयोगियों ने विशाल आर्य समाज मंदिर के निर्माण का संकल्प लिया है। इन्होंने अपने अथक प्रयासों से मंदिर निर्माण की सारी रूपरेखा तथा नक्शा आदि बनवाने की औपचारिकता पूर्ण कर ली है। इसके अतिरिक्त वहाँ की सरकार से समस्त वार्तालाप कर भवन निर्माण की लिखित अनुमति प्राप्त कर ली है। भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया गत 27 सितम्बर, 2015 (रविवार) को आर्य समाज नीदरलैण्ड में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुई। इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए जहाँ हेग के मेयर, काउंसलर व नोटरी आदि उपस्थित थे वहीं सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, आसन के प्रधान डॉ. सूर्य प्रसाद बीरे, फासनेद के प्रधान श्री सुरेन महाबली, वेद प्रचारक मण्डल के प्रधान पंडित जगदीश दातादीन आदि सहित सभी गणमान्य आर्य महानुभाव उपस्थित थे।

दी हेग स्थित आर्य समाज नीदरलैण्ड ने इस भव्य आर्य समाज मंदिर की योजना बनाई है यह मंदिर समस्त मापदण्डों को ध्यान में रखकर वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्मित किया जायेगा। इस विशाल तथा आकर्षक भवन में जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए तथा अन्य समाजोपयोगी गतिविधियों को संचालित करने के लिए विभिन्न कक्षों का निर्माण किया जायेगा। ध्यान, योग, तनाव निवारण, आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा, व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण भव्य यज्ञशाला आदि

के लिए अलग-अलग स्थान निश्चित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक विकास और व्यवहार से हमारी सांस्कृतिक विरासत और वैदिक शिक्षाओं के हस्तांतरण और प्रसार के लिए नये-नये अवसर और दृष्टिकोण प्रदान किये जायेंगे। इस भव्य तथा महत्वाकांक्षी योजना पर लगभग बारह लाख यूरो के व्यय होने का अनुमान है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने देश-विदेश के समस्त आर्यों तथा संस्थाओं के अधिकारियों से इस भव्य मंदिर निर्माण के लिए दिल खोलकर दान देने की अपील करते हुए कहा कि पंडित सूर्य प्रसाद बीरे नीदरलैण्ड में आर्य समाज की ध्वजा को बुलंदी तक पहुँचाने के लिए नितान्त प्रयत्नशील हैं। यह आर्य समाज के समर्पित सिपाही हैं इन्होंने भव्य आर्य समाज मंदिर बनाने का संकल्प लिया है और प्राणपण से इस कार्य में जुटे हुए हैं। विदेशों में भी भवन निर्माण में अत्यन्त धन व्यय होता है। श्री वीरे जी ने हमें बताया कि वहाँ की मुद्रा के हिसाब से लगभग तीन लाख यूरो उनके पास हैं लेकिन जो योजना भवन निर्माण की इन्होंने बनाई है उसमें कम से कम 12 लाख यूरो व्यय होने का अनुमान है। स्वामी जी ने कहा कि बूंद-बूंद से समुद्र भर जाता है अगर हम सब अपनी पुण्य कमाई से वहाँ अपनी सामर्थ्यानुसार सहयोग राशि भेजें तो यह कार्य अत्यन्त आसान हो जायेगा। महर्षि दयानन्द के प्रचार-प्रसार के लिए इस आर्य समाज मंदिर का भव्यता के साथ निर्माण होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः मैं समस्त आर्यों से आर्य संस्थाओं से तथा आर्य समाज के अधिकारियों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि आप सब अधिक

से अधिक धनराशि आर्य समाज मंदिर निर्माण कार्य के लिए अवश्य भेजें जिससे नीदरलैण्ड में आर्य समाज की गतिविधियों को पूरे यूरोप स्तर का बनाया जा सके।

पंडित सूर्य प्रसाद वीरे अध्यक्ष ने दान राशि भेजने के लिए निम्न प्रकार निर्देश दिये हैं :-

वैश्विक धन संग्रहण वाले कार्यक्रम

बैंक स्थानांतरण विवरण

धन संग्रहण कार्यक्रम के लिए बैंक स्थानांतरण विवरण आप हमारे खाते में बैंक स्थानांतरण से दान कर सकते हैं। कृपया कीवर्ड सूचित करें "दान आसन मंदिर" यह विषय संकेत करें। यदि आप एक रसीद चाहते हैं, तो कृपया हमें लिखें :- "रसीद के लिए अनुरोध है।"

खाता जानकारी

आई एन जी (ING) बैंक : 81596

नगर : दी हेग

खाता धारक : आर्य समाज नेद-दी हेग आसन मंदिर निर्माण राशि (ASAN-Mandirbouwfonds)

बैंक पहचानकर्ता कोड (BIC) बीआईसी INGBNL2A

यूरो (€) में जमा :

IBAN यूरो : NL27ING B0000081596

आर्य समाज नीदरलैण्ड - सम्पर्क करने का विवरण

आर्य समाज नीदरलैण्ड (आसन)

Cartesiusstraat 47

2562 Sc Den Haag, दी हेग, नीदरलैण्ड

दूरभाष :- +31-70-3451652

ई-मेल : secretariaat@asan-denhaag.nl

वैबसाइट : www.asan-denhaag.nl

प्रभु तुम हमारे पथ प्रदर्शक बनो!

— सुरेश चन्द्र वेदालंकार

भग एव भगवौ अस्तु, देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तत्त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो एग पुर एता भवेह ।।

ऋ. 6/41/5

(भगवान् एव) सब ऐश्वर्यों के अधिपति होने से ही वह प्रभु (भगः अस्तु) भग कहलाते हैं। (देवाः) हे महिमाशाली (श्याम) हों (भग) हे भग! (तं त्वा) उस तुम को (सर्व इत्) सभी (जोहवीति) आह्वान करते हैं (भग) हे भग! (स) वह तुम (इदं) इस संसार में (नः पुर एता भव) हमारे पथदर्शक नायक बनो।

संसार के दुखों को दूर करके उसे सुखधाम बनाने के यत्न में जीवन को होम कर देना ही जीवन का जीवनदर्शन होना चाहिए। मानवता की सेवा ही हमारा आदर्श है। मार्टिन लूथर के शब्दों में हम कह सकते हैं, मैंने अनुभव किया है कि प्रत्येक मनुष्य का जीवन उस परम पावन विराट् जीवन का प्रवेश द्वार है, जहां हमारे सन्तापों, अभावों और विकृतियों का अन्त है। इस देह के द्वार पर खड़े होकर मैंने स्वयं इस विराट् जीवन को देखा है। मेरी सबसे प्रिय कामना यही है कि मेरे ही अन्य रूप जगत् किये कोटी-कोटी जीव भी अपनी देह में झाँकें और आनन्द, सौन्दर्य, माधुर्य एवं अमरता के इस लोक के दर्शन करें।

वास्तव में यह जीवन दुःखमय नहीं- आनन्दमय है। संसार के दुखों को जब मनुष्य देखता है, तो वह उन्हें देखकर घबरा उठता है, चिन्तित हो जाता है, और संसार को वह दुःखमय अनुभव कर आत्म सन्तोष के लिए वैराग्य के नाम पर संसार से भाग खड़ा होता है। बौद्ध दर्शन के तीन मूल तत्व हैं सर्वदुःखम् दुःखम्, सब कुछ दुख है, सर्व क्षणिक क्षणिकम् सब कुछ क्षणिक है और सर्वम् अनित्यम् सब कुछ अनित्य है। यह एक निराशावादी दर्शन है और इस दर्शन ने, अनजाने रूप में ही सही, भारतीय इतिहास पर अपना कुप्रभाव डाला है। वास्तव में यह संसार दुःखमय नहीं। परमेश्वर ने जीवात्मा को दुःख भोगने के लिए इस संसार में नहीं भेजा। वह तो आनन्द के लिए संसार में आया है। सत्यार्थ प्रकाश के अप्टम समुल्लास में स्वामी जी से प्रश्न पूछा गया जो संसार को परमेश्वर न बनाता तो आनन्द में बना रहता और जीवों को भी सुख दुःख प्राप्त न होता। इसका उत्तर देते हुए स्वामी जी ने लिखा है यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं पुरुषार्थी की नहीं। और जीवों को प्रलय में क्या सुख और दुख है? जो सृष्टि के सुख दुःख की तुलना की जाये तो सुख कई गुणा अधिक होता है और बहुत से पवित्रात्मा जीव मुक्ति के साधन कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं। उसका अनन्त सामर्थ्य, जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और धर्म देखना है वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है। इस प्रकार संसार दुःखमय नहीं अपितु संसार में सुख ही अधिक है। इस सुख की ओर बढ़ना ही इस सौन्दर्य की ओर बढ़ना ही जीवन का लक्ष्य है। कवि ने कहा है -

सुन्दर से नित सुन्दरतर, सुन्दरतर से सुन्दरतम् ।

सुन्दर जीवन का क्रम रे, सुन्दर-सुन्दर जग जीवन ।।

यह मानव जीवन सुन्दर आदर्शों और विश्वासों से ही सुखमय और सुन्दर बन सकता है।

सुन्दर विश्वासों से ही बनता रे सुखमय जीवन। इसलिए भगवान् के भग रूप की उपासिका वैदिक संस्कृति कहती है।

जीवन की लहर-लहर में, हंस खेल-खेल रे नाविक।

जीवन के अन्तरअतल में, नित बूड़-बूड़ रे नाविक ।।

इसलिए जीवन में दुखों से घबराकर विरक्त, और उदासीन नहीं बनना चाहिए। जीवन तो आशा, उल्लास और आनन्द का सन्देश दे रहा है-

जग जीवन में उल्लास मुझे, नव आशा, नव-अभिलाष मुझे ।

पर यह आनन्द कब मिलेगा? यह निराशा कब दूर होगी? दुःख और भय का कब अवसान होगा? जब हम प्रभु की शरण में जायेंगे। जब हमारे ऊपर दुःख और कष्ट आते हैं, हम उस आनन्दस्वरूप प्रभु को पुकारते हैं और वह हमारी सच्ची पुकार को सुनता है। हमारे कष्टों को दूर करता है। हर व्यक्ति अपने को किसी दूसरे के भरोसे छोड़ना चाहता है यह सृष्टि का विधान है। वह इस आश्रय के लिए अपने से महान् को खोजता है। बच्चा कितना निश्चिन्त है। उसका सारा बोझ माँ बाप ले लेते हैं। स्वामी रामतीर्थ अमरीका चल पड़े पास कुछ नहीं था। जब जहाज अमरीका के बन्दरगाह पर पहुँचा तब उनके साथ के यात्री ने पूछा कुछ पता ठिकाना है? कहाँ जाओगे? कहाँ रहोगे?

रामतीर्थ ने उत्तर दिया भगवान् भरोसे जा रहा हूँ। उस यात्री ने उनका सारा बोझ अपने ऊपर ले लिया। भगवान् भी सर्वत्र सबका बोझ संभाले हुए हैं। पर हाँ, सच्चे दिल से उसके प्रति आत्मसमर्पण तो कीजिए। देखिए -

जब दौलत न थे तब दूध दियो, जब दूध दिया तब अन्न न दें। जल में। थल में पशु-पच्छिन की जो सुधि लेत सो तोको हू ले हैं ।।

परन्तु यह प्रभु जब हममें तड़पन होती है, तब हमारे सहारे को पहुँच जाता है। पहुँचे क्यों नहीं वही हमारी माँ है। कहते हैं कि एक बच्चा गिर पड़ा। हाथ में कंकड़ चुभ गए। पास कुर्सी पड़ी थी। उसका सहारा लेकर उठने लगा, पर वह सरक गई। उसने मेज पकड़ी, मेज की टांग टूटी हुई थी। पास में परदा लटका हुआ था उसने परदा पकड़ना चाहा पर वह सड़ा गला था फट गया। अन्त में उसने माँ-माँ पुकारा। माता दूध गर्म कर रही थी। उसमें उबाल आ रहा था। उसे वैसे ही छोड़ कर आई और उसने बच्चे को उठा लिया। बच्चे ने कहा माँ तुम कितनी निष्ठुर हो, मैं कब से रो रहा था। तुम न आयीं। माँ ने कहा तुमने मुझे पुकारा कब? जब पुकारा तब आ गई। एक दिन बच्चा झूठ मूठ गिरा, माँ गिरा कहकर चिल्लाने लगा। माँ नहीं आई। बच्चे ने पूछा माँ आज क्यों नहीं आई? उसने कहा तेरी पुकार बनावटी थी। याद रखिए, जिसके दिल में तड़पन नहीं, भगवान् के लिए सच्ची पुकार नहीं उसे भगवान् प्राप्त नहीं होते। गुरुदत्त और श्रद्धानन्द ने भगवान् को पुकारा था भगवान् उनकी मदद को आये। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द ने पुकारा उन्हें भगवान् मिले। महात्मा गाँधी और स्वामी दयानन्द ने उन्हें पुकारा था भगवान् उनकी मदद को आये। इसलिए परमात्मा का सहारा ही सर्वोत्तम सहारा है। प्रभु का आश्रय ही परमाश्रय है।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती ने अपनी पुस्तक में एक बड़ा सुन्दर दृष्टान्त इस विषय में दिया है। उन्होंने लिखा है यदि मनुष्य ईश्वर को सचमुच अपना बन्धु पिता और विधाता समझ ले तो उसे कष्ट नहीं हो सकता। फिर तो वह निर्भय और निःशंक हो जाता है।

एक समय की बात है कि एक जहाज समुद्र में जा रहा था कि भयंकर तूफान आने लगा और जहाज के डूबने का भय उत्पन्न हो गया। सभी व्यक्ति रोने और चिल्लाने लगे। परन्तु एक ईश्वर भक्त बिल्कुल निर्भय था, प्रफुल्लित था। साथ में उसका पुत्र था, जो जहाज के डूबने और मरने की चिन्ता से बहुत दुःखी होकर रोता और चिल्लाता था। पिता ने उसे बहुत समझाया, पर उसका रोना-धोना बन्द नहीं हुआ। तब पिता ने उसे फर्श पर पटक दिया और म्यान से तलवार निकाल कर तथा अत्यन्त क्रुद्ध होकर गर्दन पर रख दी और बोला कि यदि तूने रोना-चिल्लाना बन्द न किया तो तुम्हारी गर्दन अभी धड़ से पृथक कर दी जायेगी। पिता के इस कार्य से पुत्र का ध्यान तूफान से हट गया और उसका भय भी जाता रहा। वह खिलखिला कर हँसने लगा। पिता ने और भी क्रुद्ध होकर कहा मैं अभी तुम्हारी गर्दन धड़ से अलग करता हूँ। परन्तु पुत्र ने उत्तर दिया मुझे डर इसलिए नहीं लगता कि मैं जानता हूँ कि यह तलवार मेरे पिता के हाथ में है अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह तलवार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। तब पिता ने कहा इसी प्रकार मुझे दृढ़ विश्वास है कि तूफान और मृत्यु से मुझे कोई हानि नहीं पहुँच सकती। जब आप यह सोच लेंगे तब आपकी पुकार वह प्रभु अवश्य सुनेगा। आपका कल्याण होगा अकल्याण नहीं। तब आप स्वयं कहेंगे।

राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है।

यहाँ यूँ भी वाह-वाह है, और तू भी वाह-वाह है।

इस प्रकार यह आनन्द यह निर्भयता प्रभु की शरण में जाने से ही मिल सकती है। ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि और अनन्त सत्ताएँ हैं। इनमें से प्रकृति जड़ है, अचेतन है। आनन्दस्वरूप और सत् है। वह भग का आश्रयस्थल है। सुख का अधिष्ठान है। तीसरा जीवात्मा है। इसका लक्षण है इच्छाद्वेषप्रयत्न सुख दुःख दोनों होते हैं। वह सुख के लिए, आनन्द के लिए प्रयत्न करता है। प्रयत्न वह दो ही दिशाओं में कर सकता है। एक प्रकृति की ओर और दूसरा ईश्वर की ओर। प्रकृति की ओर जब वह जाता है तो क्योंकि प्रकृति में आनन्द नहीं, जीव को आनन्द की उपलब्धि नहीं होती। प्रकृति जड़ है। उसमें न सुख है, न दुःख है, न कष्ट है, न आनन्द है। आपको जिस प्रकार चावल की दुकान पर चावल मिलेगा, कपड़े की दुकान पर चावल नहीं मिलेगा। वैसे ही आनन्द निधान भगवान् से ही आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी।

एक बार कौआ एक रोटी का टुकड़ा लेकर पेड़ की डाल पर बैठ

गया। नीचे तालाब था। तालाब में रोटी की परछाई देखकर एक कुत्ता उस पर झपटा। रोटी पानी के हिलने से इधर-उधर होती रही और कुत्ता उसे पकड़ने की कोशिश करते-करते थक कर हार गया। उसकी मृत्यु हो गई। रोटी नहीं मिली। रोटी मिलती कैसे? वह तो ऊपर थी। रोटी के लिए कुत्ते को पानी में न जाकर ऊपर पेड़ पर चढ़ना चाहिए था। ठीक उसी प्रकार मनुष्य प्राकृतिक वस्तुओं और सुखों में आनन्द और सुख समझ कर उनके पीछे भागता है, पर उन वस्तुओं में सुख न होने से वह उसे मिलता नहीं। मनुष्य थक जाता है, हार जाता है और उनमें मर भी जाता है। पर उसे सुख और आनन्द नहीं मिल पाते। यह मन्त्र प्रातःकाल के समय आनन्द, सुख एवं ऐश्वर्य के अक्षय भंडार भगवान् का स्मरण करने उसका आह्वान करने, उससे आनन्द और ऐश्वर्य प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। यह भी बतलाता है कि जीवन में प्रभु ही हमारा सच्चा मार्गदर्शक हो सकता है। परमेश्वर हमें सदा उत्तम मार्ग दिखलाता है। हमारी आत्मा में बल भर देता है। हमें हमारी आत्मिक शक्ति का बोध करता है। और जीवन समर में संघर्ष की प्रेरणा देता है। जो व्यक्ति इस आत्मिक बल का, भगवान् के ऐश्वर्यों का, उसके विशाल धन-धान्य के भंडार का दर्शन कर लेता है, उसे फिर किसी वस्तु की कमी नहीं रहती और न किसी वस्तु का भय रहता है।

महात्मा गाँधी जब किसी मामले को लेकर बहुत व्यग्र होते थे, उन्हें मार्ग न सूझता था, तब वे अपने को उस भगवान् पर छोड़ देते थे। उस समय उन्हें आन्तरिक ध्वनि सुनाई देती थी। यह आवाज और कुछ नहीं एकमात्र प्रभु की प्रेरणा होती थी, और वह महात्मा गाँधी का मार्गदर्शक बनती थी।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में एक अद्भुत रहस्य बतलाया है। उसी क्षण मनुष्य कोई काम प्रारम्भ करता है। आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, लज्जा, शंका और अच्छे काम करने में अभय, निःशंकता आनन्द और उत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है। और वह जीवात्मा जब शुद्ध होकर परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं।

महर्षि ने स्पष्ट बतला दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा मार्ग दिखलाता है। परन्तु स्वार्थी सुनता हुआ भी नहीं सुनता और कुमार्ग पर चलने लगता है। फिर भी प्रभु आवाज देता है, क्या कर रहो हो, संभल जाओ! संभलो पतित न होओ, दुःख में न पड़ो, गिरो नहीं उठो। यह आवाज जो सुन लेता है, उसके अनुसार चल पड़ता है, वह कुर्म से बच जाता है और फिसलकर गिर कर भी पुनः उठकर संभल कर सन्मार्ग पर चलने लगता है। कोई भी पग उठाने से पूर्व परमात्मा से पूछे कलँ कि न कलँ? अन्तरात्मा से जो ध्वनि उठे, उसे परमात्मा का मार्गदर्शन समझो, वही परमात्मा की आवाज है। यह आवाज हृदयाकाश में विद्यमान रहती है परमात्मा की आवाज है। यह आवाज हृदयप्रकाश में विद्यमान प्रभु का सन्देश है मार्गदर्शन है। आइए, हम प्रातःकाल भगवान् का स्मरण करें और ध्यान रखें।

1. जीवन एक मधुर गीत है, दर्द भरी कहानी नहीं। जीवन विजय है पराजय नहीं।

2. यदि आनन्द चाहते हो तो कष्टों और दुःखों का चिन्तन छोड़ दो। वैभव प्राप्त करना चाहते हो तो निर्धनता के विचारों को हृदय से निकाल दो।

3. भगवान् की शरण में जाने से सौन्दर्य रत्न प्राप्त होते हैं। यदि हम प्रभु की शरण में जायेंगे तो हमें उससे बल प्राप्त होगा और अपनी शक्ति पर विश्वास प्राप्त होने से उसके ऐश्वर्य हमें मिलेंगे।

4. आपके रोगों की चिकित्सा न डॉक्टर करता है न वैद्य और न हकीम। आपका सबसे बड़ा चिकित्सक भगवान् है। उसे याद करो।

5. जिस ईश्वर ने सारे संसार को पूर्णता प्रदान की है, उसके भंडार में तुम्हारे लिए भी सब कुछ है। वह असीम है। सीमा में बांधने वाले तो हम हैं। ईश्वर तो प्यासी आत्माओं के लिए अमृत बरसाता है। आइए, हम भी उसी का आह्वान करें। उसे ही अपना सहारा बनायें। अन्त में इस हिन्दीगान को गाकर उसकी महिमा सोचें।

भगवन् वैभव वाले देव! तुम हो पूर्ण दिव्यतम सुन्दर! महादेव 'भग' अनुकम्पा दो, भीख मांगने बालरूप धर। हम आए हैं पास तुम्हारे, छिपी हुई निधि दिखलाओ निधिखुले हाथ दो दान हमें प्रिय, हैं पुकारते तुम्हें सभी विधि इस संसार सरणि में वैभव आगे चलना रूपधार नव, बन जाना हे मृत्युंजय! यों पूरा हो जीवन अभिनय।

बच्चों का नैतिक विकास

— डॉ. भीम सिंह

यदि हमें व्यक्ति व समष्टि (व्यक्ति और राष्ट्र अथवा समाज) के रूप में विकसित होना है तो विशेष ध्यान देना होगा। हमें शिक्षा को ठीक से पुनः परिभाषित करना होगा और तदनुसार उसकी अनुदेशात्मक तथा मूल्यांकनात्मक विधियों में आमूल-चूल परिवर्तन करने होंगे। इसका मूल मन्त्र है समस्त अध्यापन अधिगम प्रक्रिया को मूल्यसंदर्भित रूप देना। बच्चों के साथ हमारी प्रत्येक अन्तः क्रिया चाहे वह कक्षा के अन्दर अथवा बाहर हो उसके विकास में साधक हो, बाधक नहीं। हमारा कोई कार्य पक्षपातपूर्ण अथवा पूर्वाग्रह युक्त नहीं हो। हम उसके व्यक्तित्व का सम्मान करें उसकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो, उसे स्वयं सोचने और निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों द्वारा जाने अनजाने में निदर्शित अनुचित व्यवहार के प्रति संवेदनशील होकर व्यवहार करें। इसमें अध्यापक को अपना दायित्व समझना होगा। वह बच्चे के व्यवहार के सम्बन्ध में निष्क्रिय या उदासीन मनोभाव नहीं रख सकता परन्तु यह ध्यान रहे कि बच्चों का विकास तथा उसकी शिक्षा विद्यालय से आरम्भ नहीं होती। वह तो परिवार में उसके जन्म के कुछ समय पश्चात् ही आरम्भ हो जाती है। अतः अध्यापक से भी पूर्व बच्चों के विकास में माता-पिता का दायित्व आता है। उन्हें चाहिए कि वे अपने बच्चों के उपयुक्त विकास के लिए अपने पालन-पोषण के तरीकों सम्बन्धी सही दृष्टिकोण को अपनाएँ। माता-पिता ही वस्तुतः बच्चों के प्रारम्भिक व सर्वाधिक प्रभावी शिक्षक होते हैं। परन्तु आज दुर्भाग्य यह है कि आजकल के इस व्यस्त युग में या कहें कि जीवन-वृत्ति उन्मुख युग में बच्चों के पोषण में जितना और जैसा ध्यान देने की आवश्यकता होती है हम उतना नहीं दे पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त इस सम्बन्ध में हम कुछ अकुशल व अन्धविश्वास रीतियों का अनुसरण करते हैं जिससे बच्चे का विकास अवरूद्ध हो जाता है अथवा बच्चा दिशा-विहीन व पथभ्रष्ट हो जाता है। इस सन्दर्भ में या तो हम बच्चे को पूर्ण स्वतन्त्र अपितु उन्मुक्त छोड़ देते हैं या हम सत्तावादी या दण्डात्मक कठोर अनुशासनात्मक विधियों का प्रयोग करते हैं। पहली अवस्था में बच्चा अपने वातावरण से अलग प्रभाव व अनुभव प्राप्त कर लेता है और दिशा विहीन हो जाता है तथा अपने आपको कई बार अप्रतिरक्षित व उपेक्षित समझ लेता है। दण्डात्मक व कठोर अनुशासनात्मक रीति मनोवैज्ञानिक दृष्टि से निश्चय ही बच्चों के विकास में बाधक कारक होती है। ऐसे बच्चे या तो भावनात्मक रूप से दमित हो जाते हैं या कुछ बच्चे उद्दण्ड व नकारात्मक वृत्ति

विकसित कर लेते हैं। इस प्रकार दोनों अवस्थाएँ बच्चे के विकास में वांछनीय नहीं समझी जाती।

अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी स्वयं के तथा राष्ट्र के विकास में समुचित योगदान देने में सक्षम हो तो हमें उनके पोषण व शिक्षा के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा और यह दायित्व माता-पिता तथा अध्यापक दोनों का समान रूप से है।

अनुभव जन्य शोधों के आधार पर यह सुनिश्चित हो चुका है कि बच्चों के सामाजिक नैतिक विकास में पारिवारिक, पारस्परिक सम्बन्ध तथा उनका बच्चे के प्रति व्यवहार अति महत्वपूर्ण कारक होते हैं। अर्थात् माता-पिता आपस में सौहार्द से या एक दूसरे को समझ कर व्यवहार करते हैं या फिर परस्पर झगड़ते रहते हैं और मारपीट भी कर देते हैं। यदि माता-पिता आपस में विषम सम्बन्ध रखते हैं तो इसका बच्चे के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना निश्चित है।

इसके अतिरिक्त यदि माता-पिता का बच्चे के प्रति व्यवहार सकारात्मक स्वीकार्य, प्यार और विश्वास से भरा है और वे बच्चे की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील हैं तो निश्चय ही बच्चे का विकास एक वांछनीय दिशा में होगा। जिन माता-पिताओं में बच्चों के प्रति विश्वास की कमी है या जो अत्याधिक टोका-टाकी करते रहते हैं, उनके बच्चों का सामाजिक, नैतिक विकास अवरूद्ध हो जायेगा। फिर यदि माता-पिता बच्चे के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं, उनकी आवश्यकताओं की अवहेलना करते हैं, एक कठोर सत्तावादी व्यवहार करते हैं तो उन बच्चों में कुण्ठाएँ व दुश्चिन्ता जन्म लेती हैं जो बच्चे के समस्त व्यक्तित्व को विकृत कर देती है। मेरे अपने अनुभव जन्य शोध अध्ययनों के आधार पर यह पाया गया कि बच्चे को माता-पिता से आदर, स्नेह व स्वीकरण की आवश्यकता होती है। यदि माता-पिता उसके व्यक्तित्व का सम्मान करेंगे तो बच्चे भी बड़े होकर उन्हें आदर व सम्मान देंगे इसके विपरीत यदि माता-पिता बच्चों को डर-दुत्कार, कुण्ठा व निराशा देंगे तो उसी प्रकार का व्यवहार वे अपने बच्चों से अपने प्रति प्राप्त करेंगे। जो भी आपने बच्चे को दिया वही वह आपको वापस देगा। यदि आपने प्यार व सम्मान दिया है तो वह आपको प्यार व सम्मान देगा और यदि लताड़ व डर दिया है तो वही आपको वापस मिलेगा। क्योंकि जो बच्चे को मिला ही नहीं वह वापस कहां से देगा। अतः आज एक अच्छे समाज के विकास के लिए माता-पिता को भी शिक्षित करने की

उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि बच्चों को। बच्चों में व्यक्तित्व सम्बन्धी इन गुणों का समावेश अनुकरण अथवा अन्तःक्रिया के आधार पर होता रहता है। अतः माता-पिता को अथवा शिक्षक को अपने व्यवहार के प्रति जागरूक रहना चाहिए। बच्चा उस व्यक्ति का अनुकरण करता है जिसे वह चाहता है, प्यार करता है, जिसमें उसका विश्वास है अन्य का नहीं।

माता-पिता के पश्चात् बच्चे के व्यक्तित्व को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण कारक है अध्यापक तथा उसका बच्चे के प्रति व्यवहार। जब बालक विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह अपने साथ परिवार या परिवेश से प्राप्त कुछ नैतिक सामाजिक व्यवहार लेकर आता है। बच्चे के ये व्यवहार अनुचित व नकारात्मक भी हो सकते हैं और उचित व सकारात्मक भी। दोनों ही दशाओं में अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यदि अध्यापक का व्यवहार सकारात्मक स्वीकार युक्त होगा तो वह नकारात्मक प्रवृत्ति वाले बच्चों में भी विश्वास, प्यार व सामाजिकता का संचरण कर सकेगा और यदि उसका व्यवहार नकारात्मक अर्थात् कठोर, संदेहात्मक, अविश्वासयुक्त तथा पक्षपात पूर्ण होगा तो वह बच्चे के हित की अपेक्षा अहित अधिक करेगा। इस सन्दर्भ में अनुभव जन्य शोध साक्ष्य लगभग वैसे ही हैं जैसे कि माता-पिता के सम्बन्धों के विषय में पाये गये। बच्चों को एक बच्चे (अपरिपक्व जीव) के रूप में स्वीकार करना उसके विकास में योगदान की प्रथम सीढ़ी है। उनमें पाई जाने वाली व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं क्योंकि वे भिन्न-भिन्न परिवेश, परिवार तथा आनुवंशिकता वाले होते हैं। एक अध्यापक को इन सब बातों का समझना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अध्यापक का बच्चों के प्रति व्यवहार तर्कसंगत हो (अर्थात् पक्षपात पूर्ण कभी न हो), वह उनकी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो और यथा सम्भव बच्चों की सहायता करें उनमें स्वतन्त्र निर्णय लेने तथा स्वायत्त व्यवहार को सम्बन्धित कर व बच्चों को प्रोत्साहित करें। यदि अध्यापक बच्चों के प्रति देखभाल पूर्ण व्यवहार निर्धारित करेगा तो निश्चय ही बच्चे में इस प्रकार के भाव उत्पन्न व विकसित होंगे। न्यायपरकता तथा दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता वास्तव में ये दोनों ही नैतिक सामाजिक विकास के अनिवार्य घटक होते हैं जिन्हें व्यवहार में परिणत करना बच्चे के इस प्रकार के विकास को सम्बन्धित करने के लिए अपरिहार्य है। अतः हम देखें कि अध्यापक अथवा आर्य मानव के रूप में हमारी प्रत्येक क्रिया पक्षपात रहित हो तथा इनमें उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए।

आजमाएँ तो जीवन स्वर्ग बन जाए

— वैद्य राजेन्द्र साह

1. यदि आप अपने माता-पिता का आदर करेंगे तो आपके बच्चे भी आपका आदर करना सीखेंगे।

2. दूसरे मनुष्यों से जैसा व्यवहार आप अपने लिए पसन्द करते हैं वैसे ही व्यवहार यदि आप दूसरों के साथ करें तो आपका जीवन बदलकर स्वर्ग बन सकता है। सामने वाले के स्थान पर अपने को रखकर जरा सोचने की आदत डालें कि यदि “मैं उसकी जगह होता तो क्या करता?” तो बहुत सी विकट समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा और साथ ही अनावश्यक तनाव से मुक्ति भी मिलेगी।

3. किसी को भी बिना मांगे और अनावश्यक सलाह देने और बात-बात पर टोकने की आदत त्याग दें। इस तरीके से किसी व्यक्ति, चाहे बच्चा हो या बड़ा, में सुधार लाने की आशा करना व्यर्थ है। जीवन में सुधार लाने के लिए प्रकृति, सत्संगति, महापुरुषों का जीवन और श्रेष्ठ लेखकों की प्रेरणादायक पुस्तकें ही वास्तविक प्रेरणा स्रोत हैं।

4. जैसा मधुर व्यवहार विवाह से पहले प्रेमी-प्रेमिका के मध्य देखा जाता है, वैसे ही व्यवहार प्रेमी-प्रेमिकावत् व्यवहार, एक-दूसरे को समझने की भावना और परस्पर तालमेल का विवाह के बाद जीवन में किया जाये तो पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन वास्तव में आनन्ददायक बन सकता है। फिर भला दाम्पत्य जीवन में कटुता और क्लेश का स्थान कहाँ?

5. ‘क्या खाते हैं’ इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि खाये हुए आहार को ठीक से पचाना। अतः जो आहार आप ठीक से पचा न सकें उसका सेवन न करें और जो खाद्य पदार्थ आपको अनुकूल न आता हो, उसका सेवन त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार क्या कमाते हैं? इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि आप अपनी आय को विवेक और बुद्धिमता से कितना खर्चते हैं।

6. दूसरों की बढ़ोतरी से अपना मिलान या कम्पेरिजन करके दुःखी मत होइए और न ही व्यर्थ प्रतिस्पर्धा में उतरकर होश खोइए। प्रतिस्पर्धा का कहीं अन्त नहीं है। ईर्ष्या और दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने का स्वभाव मानसिक तनाव और अनेकानेक रोगों का

कारण बनता है, जबकि दूसरों को सुखी देखकर आनन्दित होने का मजा अपने आप में किसी स्वर्गिक सुख से कम नहीं है।

अपने जीवन रूपी ‘आधी भरी, आधी खाली गिलास’ के आधे खाली भाग को देखकर और अपनी उपलब्धियों को नजरअन्दाज करके व्यर्थ में दुःखी मत होइए। ‘जो पास नहीं है’ उसे देखकर निराश होने की बजाए ‘जो पास में है’ उसको देखकर आप सदा आशावादिता के साथ खुशियाँ बटोरिए। सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाइए। ‘जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि’।

इस सृष्टि में सभी समान नहीं हो सकते। यहाँ तक कि एक ही माँ की कोख से उत्पन्न भाई-बहन में भी प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व है। यह भेद जन्म-जन्मान्तर के शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल है। कर्मवाद सद्कर्मों की प्रेरणा देता है और सप्त-व्यसनों से बचाता है। जैसा कोई कर्म करेगा वैसे ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के द्वारा इस जीवन और अगले जन्म को निखारना आपके अपने हाथ में है। महाभारत में भगवान् श्रीकृष्ण ने फल की कामना किए बिना, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है :-

‘कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन’

इस मर्म को समझने के बाद बहुत से मानसिक तनावों से सहज ही मुक्ति मिल जाती है और कर्त्तव्य परायणता का पथ प्रशस्त हो जाता है।

7. ‘सादा जीवन, उच्च विचार’ के अपनाने से जहाँ आत्मा चमकती है वहाँ फैशनपरस्ती और कुत्सित विचारों से आत्मा मलीन होती है। हमारी संस्कृति आत्मोन्मुखी होने से आत्मा प्रधान है। यहाँ व्यक्ति के चरित्र और गुणों की पूजा होती है शरीर और शरीर पर धारण किए गए वस्त्र आभूषणों या उनके नकल (फैशन) की नहीं।

आवश्यकताओं को कम करने में ही सच्चा सुख छिपा है। चाह घटाने से चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है। किसी ने सच कहा है :-

चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।

जिसको कुछ नहीं चाहिए, वह है शहन्शाह।।

8. सभी धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ, पूजा-पद्धतियों का हमें सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ये सब केवल माध्यम अथवा मार्ग हैं—एकमात्र लक्ष्य परमात्मा तक पहुँचने के लिए। जिस प्रकार अनेक नदियों और जल-धाराओं के जल का एकमात्र लक्ष्य आगे जाकर अन्त में विशाल सागर में बिलीन होकर उस सागर से एकाकार हो जाना है, उसी प्रकार समस्त धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ और उनसे जुड़ी पूजा-पद्धतियों के उपासक का अन्तिम लक्ष्य भी आगे जाकर अन्त में परमात्मा की प्राप्ति ही है।

‘सर्वधर्मसम्मानभाव’ इतनी सी बात ठीक से समझकर जीवन में आचरण में लाई जाये तो साम्प्रदायिकता का नामोनिशान न रहेगा और इंसानियत जागेगी जिससे हमारा जीवन स्वर्ग बन जायेगा।

9. किसी भी भारतीय को किसी के आगे नतमस्तक होने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारी संस्कृति महान् है, जो कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, ज्ञानी महावीर, महात्मा बुद्ध, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द जैसे धर्मनायकों द्वारा स्थापित महान् मानवीय मूल्यों और आदर्शों पर आधारित है। यथा - ‘सादा जीवन, उच्च विचार’, ब्रह्मचर्य, शाकाहार, सर्वधर्मसम्मानभाव, सभी देवी-देवताओं के प्रति सम्मान, नारी के प्रति सम्मान, माता-पिता वृजुर्गों के प्रति सम्मान, सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना, क्षमा, करुणा, सत्य, अस्तेय, समन्वयवाद, कर्मवाद, संतोष, दान, शील, तप, त्याग, समर्पण, प्रेम, भाईचारा इत्यादि पर है, जो सर्वधर्म सहिष्णुता, अनेकता में एकता, सह-अस्तित्व, ‘जीओ और जीने दो’ और ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ का सन्देश देती है। आज विरासत में मिली मानवीय मूल्यों की ऊँचाई को छूने वाली इसी संस्कृति के कारण हमारा सिर सदैव ऊँचा रहा है और इसी से हमारा देश महान् है। भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना और उन्हें जीवन में उतारना हमारा परम धर्म है। यह लेख डॉ. अजीत मेहता जी द्वारा लिखित ‘स्वदेशी चिकित्सा सार’ पर आधारित है।

ग्राम. पो. सरैया बाजार, वाया-पारू, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)-843112

सब सुखों का आधार:—

गृहस्थाश्रम- सबसे बड़ा आश्रम

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा आश्रम है। यह लौकिक और पारलौकिक सुखों का आधार है। संसार में जितने भी सुख हैं उन सबका यह साधक है। “सत्यार्थप्रकाश” के चौथे समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम है। जो गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते? जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। “संस्कार विधि” में भी महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि गृहाश्रम संस्कार उसको कहते हैं कि जो ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य अनुसार परोपकार करना और नियतकाल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना और सत्यधर्म में ही अपना तन-मन-धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति करनी।”

मनुस्मृति (३/७७) में लिखा है कि जैसे वायु को लेकर सब प्राणी जीवित रहते हैं उसी प्रकार गृहस्थ को आश्रित कर उसके आधार पर सब आश्रम रहते हैं—

यथावायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।

तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्वाश्रमाः॥ (मनु० ३/७७)

इस आश्रम के बिना। गृहस्थ के बिना संसार का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यास इन तीनों आश्रमों का, अथवा सब लोगों को दान, ज्ञान और अन्नादि द्वारा गृहस्थ ही धारण करता है अथवा गृहस्थ ही सबकी सहायता और रक्षा करता है इसलिए गृहस्थाश्रम ज्येष्ठाश्रम है। सबसे बड़ा आश्रम है। सब व्यवहारों में धुरन्धर कहलाता है। सब लोग गृहस्थी से ही सब प्रकार की आशा रखते हैं। मनु ने लिखा है कि ऋषि, पितर, देवता, अतिथि तथा अन्य प्राणी गृहस्थों या परिवार वालों से ही भोजनादि की आशा रखते हैं। उनका अन्य कोई आधार/आश्रय नहीं है इसलिए गृहस्थ को सबको अन्न जलादि देना चाहिए:—

यस्मात्त्रयोऽपि आश्रमिणे दानेनान्नेन चान्वहम्।

गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही॥

ऋषयः पितरा देवा भूतान्यतिथियस्तथा।

आशास्ते कुटुम्बिभ्य स्तेभ्यः कार्यं विजानता॥ (मनु० ३/७८, ३/८०)

इसलिए जो व्यक्ति इस लोक में नित्य सुख चाहता है और अक्षय सुख या मोक्ष चाहता है उसे प्रयत्नपूर्वक, धैर्य और हिम्मत के साथ गृहस्थ को धारण करना चाहिए। दुर्बल इन्द्रियों वाले व्यक्ति इस गृहस्थ को भली भांति धारण नहीं कर सकते। गृहस्थ धारण करने के लिए शरीर और इन्द्रियों का स्वस्थ एवं बलयुक्त होना आवश्यक है। मनु कहते हैं—

स संधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।

सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधोर्या दुर्बलेन्द्रियैः॥ (मनु० ३/७६)

स्वस्थ समाज के लिए; समाज में दुराचार, व्यभिचार तथा अनाचार को रोकने के लिए विवाह और गृहाश्रम आवश्यक है। आज उन्मूलक प्रेम, स्वच्छन्द प्रेम के कारण एड्स जैसी महामारी फैलती जा रही है तथा पश्चिम में अनब्याही माताओं अथवा कुंवारी माताओं का प्रचलन होने लगा है। इस उन्मुक्त या स्वच्छन्द प्रेम के बारे में महर्षि दयानन्द ‘सत्यार्थप्रकाश’ में लिखते हैं कि यह पशुपक्षियों का व्यवहार है मनुष्यों का नहीं। जो मनुष्यों में विवाह का नियम न हो तो गृहाश्रम के अच्छे-अच्छे व्यवहार सब नष्ट भ्रष्ट हो जायें। कोई किसी की सेवा न करे और महाव्यभिचार बढ़कर सब रोगी, निर्बल और अल्पायु होकर शीघ्र-शीघ्र मर जायें? कोई किसी से भय व लज्जा न करे। वृद्धावस्था में कोई किसी की सेवा भी न करे।

संसार के सारे व्यवहार गृहस्थ या गृहाश्रम पर आधारित हैं। इसलिए गृहस्थ को सब व्यवहारों में धुरन्धर

कहा गया है। “ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका” में भी महर्षि दयानन्द गृहाश्रम के बारे में लिखते हैं, जो सामाजिक नियमों की व्यवस्था के अनुसार ठीक-ठीक चलता है, यही गृहस्थ की उन्नति का कारण है। जो वस्तु किसी से लेवे अथवा देवे सो भी सत्यव्यवहार के साथ करे..... इस प्रकार गृहस्थ लोगों के सब व्यवहार सिद्ध होते हैं क्योंकि जो गृहस्थ विचारपूर्वक सबके हितकारी काम करते हैं उनकी सदा उन्नति होती है।” यही नहीं महर्षि दयानन्द ने “संस्कार विधि” में गृहस्थों द्वारा ही शासन एवं राजकाज चलाने का विस्तार से वर्णन किया है। आज संसार में राजकार्य अथवा शासन गृहस्थी ही चला रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, रूस, चीन, जापान, भारत, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका आदि कोई भी देश/राष्ट्र हो, वहाँ के शासनाध्यक्ष अथवा राष्ट्राध्यक्ष; प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति घर-परिवार वाले, गृहस्थी ही हैं। कहीं कोई अपवाद हो सकता है। अतः सारा संसार गृहस्थमय है, गृहस्थ पर आधारित है। यू०एन०ओ० राष्ट्र संघ के महासचिव भी (कोफी अन्नान), गृहस्थी हैं, परिवार वाले हैं। संस्कृत में तो सारी धरती को ही एक कुटुम्ब या परिवार कहा है— ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’। इसलिए मनु ने ठीक ही कहा था कि वेदों और स्मृतियों के विधान से गृहस्थ ही श्रेष्ठ आश्रम है क्योंकि यह



तीनों आश्रमों का अर्थात् सबका अन्नादि द्वारा भरण-पोषण करता है:—

सर्वेषमपि चैतेषां वेदस्मृति विधानतः।

गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्रीनेतान् बिभर्ति हि॥

(मनु० ६/८६)

गृहस्थाश्रम सुखों का आधार है, खुशियों का भंडार है। गृहाश्रम के सुखों का वर्णन करते हुए वेद (अथर्व० १४/१/०६) कहता है कि हे दम्पतियों! तुम दोनों इस गृहस्थाश्रम में ही वर्तमान रहो और पति-पत्नी रूप में अपनी प्रतिज्ञा से कभी वियुक्त या अलग न होना। गृहस्थ में प्रीतिपूर्वक रहते हुए पूर्ण आयु को प्राप्त करो। पुत्र-पौत्रों के साथ/नातियों के साथ क्रीड़ा करते हुए, आनन्दोल्लास मनाते हुए उत्तम घरों में मुदित होकर प्रसन्नता पूर्वक रहो—

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।

क्रीडन्तौ पुत्रैर्नपुत्रिभिर्मोदमोनो स्वस्तेका॥

(अथर्व० १४/१/६)

वेद ने गृहस्थ में पुत्र-पौत्रों के साथ, नातियों के साथ खेलने की क्रीड़ा करने की तथा खुशियाँ, हर्ष मनाने की बात कही है। गृहस्थ में बालकों के साथ क्रीड़ा करने तथा हर्षोल्लास मनाने के सुख का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास ने “शाकुन्तलम्” (७/१७) में लिखा है कि वे गृहस्थ लोग धन्य हैं जो कली के समान कुछ-कुछ खिले हुए दान्तों वाले, अकारण हंसने वाले और तुतलाकर मीठी बातें करने वाले बालकों को अपनी गोद में उठाते हैं तथा उनके शरीर की धूलि से मैले होते हैं—

‘धन्यास्तदङ्ग रजसा मलिनी भवन्ति’

(अभिज्ञानशाकुन्तलं ७/१७)

गृहस्थ के सुख का वर्णन करते हुए संस्कृत के

महाकवि भवभूति ने ‘उत्तर रामचरितम्’ में लिखा है कि यह सुख-दुःख में एक समान रहता है, सब अवस्थाओं में अनुरूप रहता है। हृदय को यहाँ शान्ति मिलती है। बुढ़ापे में भी इसका रस कम नहीं होता। समय के बीतने पर यह परिपक्व प्रेम में स्थित रहता है। यही वह कल्याणकारी दाम्पत्य प्रेम है जो किसी-किसी भाग्यशाली पुरुष हो प्राप्त होता है:—

अहैतं सुख-दुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यद्।

भद्रतस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हितत् प्राप्यते॥

गृहस्थ लौकिक सुख के साथ-साथ पारलौकिक अथवा मोक्षसुख का भी आधार है। गृहस्थ में मनु० (३/४३) ने संयम तथा अपनी पत्नी के साथ प्रेम पर बल दिया है और यहाँ तक (मनु० ३/५०) कहा है कि जो व्यक्ति गृहस्थ में संयमपूर्वक रहता है वह प्रत्येक आश्रम में ब्रह्मचारी के समान है—

‘ब्रह्मचार्यैव भवति यन्त्र तत्राश्रमे वसन्’ (मनु० ३/५०)

गृहस्थ लौकिक सुख का ही नहीं पारलौकिक सुख का भी साधन है। गृहस्थ स्त्री पुरुष को लौकिक सुखों के साथ परलोक अथवा मोक्ष सुख के लिए भी यत्न करना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को धीरे-धीरे धर्म संयम करना चाहिए क्योंकि धर्म की सहायता से मनुष्य बड़े-बड़े दुस्तर दुःखसागर को, अन्धकार को पार कर सकता है। (मनु० ४/२३८-२४३) ने विस्तार से इस पर प्रकाश डाला है और कहा है कि धर्म ही मनुष्य का एकमात्र सहारा है वही एकमात्र संगी साथी है। धर्मप्रधान-पुरुष के दोष, दुष्कर्म तप से मिट जाते हैं और वह उस धर्म से ही प्रकाशस्वरूप परमात्मा को प्राप्त करता है:—

धर्मप्रधानं पुरुषं तपसा हतकिल्बिषम्।

परलोकं नयत्याशु भास्वन्तं खशरीरिणम्॥

(मनु० ४/२४३)

मनु० (१२/१०२) कहते हैं कि गृहस्थ में रहते हुए जो व्यक्ति अपने कर्तव्य कर्म करते हुए, वेदशास्त्र के तत्त्वज्ञान को जान लेता है वह इसी लोक में ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है फिर चाहे वह किसी भी आश्रम में रहे:—

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो यत्र यत्रास्तमे वसन्।

इहैव लोके तिष्ठन्स ब्रह्मभूयाय कल्पते।

(मनु० १२/१०२) इससे बढ़कर गृहाश्रम की महिमा और क्या हो सकती है? इसलिए मनुव (६/६०) ने कहा था कि जैसे बड़े-बड़े नदी और नद सागर में जाकर स्थिर होते हैं, उसी प्रकार गृहस्थाश्रम एक समुद्र के सामान है जिसमें सब आश्रम, सब लोग स्थिति अथवा आश्रय प्राप्त करते हैं—

‘यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।

तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्॥

(मनु० ६/६०)

अतः मनु के अनुसार लौकिक और पारलौकिक सुखों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नपूर्वक गृहस्थ को धारण करना चाहिए क्योंकि वेदशास्त्रों के अनुसार गृहस्थाश्रम सबसे श्रेष्ठ आश्रम है। सारा संसार इसी पर आश्रित है। गृहस्थ में रहकर भी मनुष्य वेदशास्त्र के तत्त्वज्ञान को जानकर यहीं रहते हुए इसी लोक में ब्रह्मज्ञानी हो जाता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम है। वेदों में गृहस्थ की महिमा भरी पड़ी है। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर इसका वर्णन किया है। वेद (अ० १४/१/६) कहते हैं कि तुम उत्तम घरों में रहते हुए पुत्र-पौत्रों, नातियों के साथ क्रीड़ा करते हुए, आनन्दित होकर, प्रीतिपूर्वक रहते हुए— पूर्ण आयु को प्राप्त करो। आज घर-परिवारों में अन्य सब कुछ है किन्तु हंसी-खुशी, प्रीति-प्रेम नहीं है। इसीलिए वेद (अ० १४/२/४३) अन्यत्र कहता है कि तुम गृहस्थ में परस्पर हास्य-विनोद करते हुए रहो। बड़े प्रेम और उत्साह से हर्ष एवं खुशियाँ मनाते हुए रहो:— ‘हसामुदौ महसा मोदमानौ— जीवावुषसोविभाती:’ (अथर्व० १४/२/४३)

—४३२, सै.-८ आर्य
करनाल-१३२००१

'मृतक श्राद्ध विषयक भ्रान्तियां : विचार और समाधान'

—मनमोहन कुमार आर्य



हिन्दू समाज आज कल अन्धविश्वासों का पर्याय बन गया है। श्राद्ध शब्द को पढ़कर धर्म-कर्म में रुचि न रखने वाला एक अल्प ज्ञानी सामान्य व्यक्ति भी समझता है कि श्राद्ध अवश्य ही श्रद्धा से सम्बन्ध रखता है। जिस प्रकार से देव से देवता शब्द बनता

है उसी प्रकार से श्रद्धा से श्राद्ध बनता है। श्रद्धा उन पारिवारिक जनों व विद्वानों के प्रति होती है जिनसे हमें कुछ लाभ हुआ होता है। हमारे माता-पिता व वृद्ध पारिवारिक लोग व आचार्यगण हमारी श्रद्धा के मुख्य रूप से पात्र होते हैं। माता-पिता, दादी-दादा, प्रपितामही-प्रपितामह आदि के अतिरिक्त चाचा, ताऊ, बुआ, फूफा, मामा व मौसी आदि सभी संबंधियों के प्रति हमारी श्रद्धा व आदर का भाव होता है। अतः श्रद्धा पूर्वक उन जीवित अपने से अधिक आयु वालों को अपने सद्व्यवहार व सेवा से सन्तुष्ट रखना ही श्राद्ध व तर्पण हो सकता है। यदि हम माता-पिता, अन्य वृद्धों व आचार्यों, सभी को भोजन, वस्त्र व उनकी आवश्यकतानुसार धन आदि उन्हें देते हैं और वह हमारी इस सेवा व दान से प्रसन्न होते हैं तो हमारा यह कृत्य श्राद्ध व तर्पण में आता है। श्राद्ध है श्रद्धापूर्वक सेवा और तर्पण अपने आचरण व सेवा से उन्हें सन्तुष्ट करना। माता-पिता को सेवा की आवश्यकता तभी तक होती है जब तक कि वह जीवित होते हैं। मरने के बाद अन्त्येष्टि द्वारा उनका शरीर भस्म कर दिया जाता है। उनका मुख, उदर व सभी शरीरांग जल कर नष्ट हो जाते हैं और कुछ मुट्ठी राख ही बचती है। अब चेतन तत्व हमारी व अन्यो की अनादि, अजर, अमर, आत्मा क्योंकि शरीर से पृथक् हो जाती है अतः उसे भोजन की आवश्यकता नहीं होती। अब तो परलोक व परजन्म में उनका सहायक ईश्वर तथा उनके कर्म अर्थात् प्रारब्ध ही होते हैं। हम कुछ भी कर लें, हमारे कुछ भी करने से हमारे किसी मृतक सगे सम्बन्धी माता-पिता आदि को कोई, किसी प्रकार का व किंचित लाभ नहीं हो सकता। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए नहीं दी की वह किसी भी कार्य को इस लिए करे कि उसके पूर्वज व अन्य लोग इस कार्य को करते चले आ रहे हैं अपितु इसलिए दी है कि वह प्रत्येक कार्य को सत्य व असत्य का विचार कर करे। यदि श्राद्ध को देखे तो इससे हमारे ब्राह्मण वर्ग के पुरोहितों को विशेष आर्थिक व भौतिक लाभ होता है। वह अच्छा भोजन करते हैं और उन्हें कुछ वस्तु भी दान स्वरूप भेंट करनी होती है। किसी कार्य आदि से जिस व्यक्ति को कोई लाभ होता है तो उसका वह संस्कार बन जाता है। उसे कितना ही कोई मना करे, वह उस कार्य को छोड़ता नहीं है। रिश्वत, कामचोरी, शराब, मांसाहार जैसी बुरी आदतों की ही तरह हर कार्य जिससे किसी को कोई लाभ होता हो, उसे वह छोड़ नहीं पाता। अतः मनुष्य को स्वयं ही सत्य व असत्य का विचार करना चाहिये और असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये। इस कारण कि संसार में आपसे अधिक आपका कोई हितैषी नहीं है। और तो अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। अपना हित व अहित देखना और बुद्धि पूर्वक निर्णय करना आपका ही काम है, यह बात गाँठ बांध लेनी चाहिये। यही मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य व उद्देश्य है।

श्राद्ध में जो भोजन ब्राह्मणों को कराया जाता है उससे उनकी क्षुधा की निवृत्ति वा पेट भरता है। हमारे मृतक पूर्वजों का न तो हमें पता है और न ही हमारे श्राद्ध खाने वाले व बड़े से बड़े किसी विद्वान को कि वह आत्मायें जिनका श्राद्ध हो रहा है, वह कहाँ हैं? मृत्यु के बाद मृतक की आत्माओं की ओर से अपने किसी सगे सम्बन्धी को कभी भी अपना न तो कोई समाचार बताया जाता है और न हमारे हाल चाल ही पूछे जाते हैं। मरने के बाद मनुष्य

श्रद्धा पूर्वक उन जीवित अपने से अधिक आयु वालों को अपने सद्व्यवहार व सेवा से सन्तुष्ट रखना ही श्राद्ध व तर्पण हो सकता है। यदि हम माता-पिता, अन्य वृद्धों व आचार्यों, सभी को भोजन, वस्त्र व उनकी आवश्यकतानुसार धन आदि उन्हें देते हैं और वह हमारी इस सेवा व दान से प्रसन्न होते हैं तो हमारा यह कृत्य श्राद्ध व तर्पण में आता है। श्राद्ध है श्रद्धापूर्वक सेवा और तर्पण अपने आचरण व सेवा से उन्हें सन्तुष्ट करना। माता-पिता को सेवा की आवश्यकता तभी तक होती है जब तक कि वह जीवित होते हैं। मरने के बाद अन्त्येष्टि द्वारा उनका शरीर भस्म कर दिया जाता है। उनका मुख, उदर व सभी शरीरांग जल कर नष्ट हो जाते हैं और कुछ मुट्ठी राख ही बचती है। अब चेतन तत्व हमारी व अन्यो की अनादि, अजर, अमर, आत्मा क्योंकि शरीर से पृथक् हो जाती है अतः उसे भोजन की आवश्यकता नहीं होती। अब तो परलोक व परजन्म में उनका सहायक ईश्वर तथा उनके कर्म अर्थात् प्रारब्ध ही होते हैं। हम कुछ भी कर लें, हमारे कुछ भी करने से हमारे किसी मृतक सगे सम्बन्धी माता-पिता आदि को कोई, किसी प्रकार का व किंचित लाभ नहीं हो सकता। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए नहीं दी की वह किसी भी कार्य को इस लिए करे कि उसके पूर्वज व अन्य लोग इस कार्य को करते चले आ रहे हैं अपितु इसलिए दी है कि वह प्रत्येक कार्य को सत्य व असत्य का विचार कर करे।

सब कुछ भूल जाता है। परमात्मा की प्रेरणा से वह अपने कर्मों के अनुसार नई योनि में जन्म लेता है। मनुष्य जन्म लेने वाला कोई बच्चा यह नहीं बताता कि मैं पहले मरा हूँ, वहाँ रहता था, अमुक नाम के लोग मेरे पुत्र-पुत्री थे, आदि आदि। कारण कि वह सब कुछ भूल चुका है। मनुष्य जन्म लेने में जीवात्मा को मात्र न्यूनतम गर्भावस में 9 महीनों का समय लगता है। किसी किसी मामले में कुछ अधिक भी हो सकता है। अब विचार कीजिए कि इस नये उत्पन्न शिशु का इसके पूर्व जन्म के पारिवारिक जनों ने श्राद्ध किया होगा तो इसको तो कभी भोजन मिलता उसे स्वयं व उसके परिवार जनों को अनुभव नहीं हुआ। यह तो जन्म

भी प्रकार से सेवा की आवश्यकता है, हमें कर्तव्य पूर्वक प्रतिदिन प्रातः व सायं उनकी यथोचित सेवा करनी चाहिये। अपनों की तो सेवा सभी को करनी है, इसके साथ ही सभी ज्ञानी व वृद्ध लोगों का भी सेवा सत्कार यथा सामर्थ्य सभी को करना चाहिये। यही मनुष्य धर्म व वैदिक धर्म है। यदि हम बुद्धिपूर्वक कार्य करेंगे और अन्धविश्वासों का त्याग करेंगे तो हम वैदिक काल के अपने स्वर्णिम वैभव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। हम भविष्य में पराधीनता व निजी व अपनी जाति व समाज के लोगों के अपमान से बच सकते हैं जैसा कि मध्यकाल, मुस्लिम व ब्रिटिश शासन आदि में हमारे पूर्वजों को झेलना पड़ा है। यदि ऐसा नहीं करेंगे और बीती बातों से सबक व शिक्षा नहीं लेंगे तो उन घटनाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है। ठोकर लगने पर जो न सम्भले उसका जो हश्र होता है, वही हश्र हमारा पुनः हो सकता है।

एक अन्य दृष्टि से भी श्राद्ध पर विचार करते हैं। हम इस समय 63 वर्ष के हैं। जब 63 वर्ष पूर्व जन्म लेकर पूर्व जन्म की मृत्यु के बाद हम इस जीवन में आये तो सम्भव है कि हमारा 30 से 35 वर्ष का कोई पुत्र रहा होगा जो अब लगभग 93 वर्ष का होगा। उसका पुत्र भी लगभग 63 का और उस 63 वर्षीय का पुत्र लगभग 33 वर्ष का हो सकता है। इस प्रकार से पूर्व जन्म के हमारे पोते और पड़पोतों का जीवित होना सम्भव है। हमें अपने विगत 63 वर्षों के जीवन में इन सभी वंशजों से कभी श्राद्ध नाम का भोजन मिला हो, ऐसा अनुभव नहीं हुआ और न ही उससे होने वाली तृप्ति अनुभव हुई। संसार

में सम्प्रति 7 अरब लोग हैं, शायद इसका एक भी गवाह नहीं मिलेगा जो दावा करे कि कभी उसके पूर्व जन्म के वंशजों के श्राद्ध से उसकी क्षुधा व अन्य कोई समस्या हल हुई हो। अतः यह मृतक श्राद्ध अन्धविश्वास ही सिद्ध होता है। महाभारतकालीन व पूर्व के साहित्य मुख्यतः वेद आदि में मृतक श्राद्ध आदि का कहीं कोई वर्णन नहीं है। अतः मृतक श्राद्ध असिद्ध है और अन्धविश्वास से अधिक कुछ नहीं है। यह भी कहना है कि हमारे कुछ ग्रन्थों में मध्यकाल में कुछ स्वार्थी लोगों ने प्रक्षेप कर दिये थे। यदि कहीं कोई उल्लेख मृतक श्राद्ध के पक्ष में है तो उस पर युक्ति पूर्वक विचार होना चाहिये। हर विद्वान, पुस्तक व ग्रन्थ लेखक को अपनी मान्यता के सम्बन्ध में तर्क व प्रमाण देने चाहिये। यदि कोरा प्रवचन हो तो उसे बुद्धि, युक्ति व तर्क हीन होने पर स्वीकार नहीं करना चाहिये। हम आशा करते हैं कि पाठक हमारे विचारों से सहमत होंगे। हम निवेदन करते हैं कि महर्षि दयानन्द ईश्वर व आप्त विद्वानों व ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त वैदिक साहित्य को पढ़कर अपने जीवित पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा सत्कार नित्य प्रति कर उनकी आत्माओं को सन्तुष्ट व प्रसन्न करें और ऐसा करके लौकिक और पारलौकिक उन्नति करें, यही वेद, शास्त्र और ऋषि दयानन्द सम्मत है।

पता: 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001

फोन:09412985121



लेने के बाद प्रातः सायं प्रतिदिन माता से भोजन पाता व करता है। यदि श्राद्ध के दिन इसके पूर्व जन्म की कोई सन्तान इसका श्राद्ध करे तो एक समय के भोजन की इसकी निवृत्ति होकर अनुभव भी होना चाहिये। ऐसा तो कभी किसी को मिलता ही नहीं है। यदि कोई यह मानता है कि श्राद्ध करने से पूर्वजों को भोजन पहुँचता है तो उन्हें प्रातःसायं दोनों समय पूरे वर्ष भर ही श्राद्ध करना चाहिये जैसे कि जीवित माता-पिता, दादी दादा व परदादी व परदादा को दिन में दो बार भोजन कराया जाता है। हर दृष्टि से मृतक श्राद्ध करना, तर्क, युक्ति व वेदादि शास्त्र विरुद्ध है। आर्य समाज के विद्वानों ने इस विषय का पर्याप्त साहित्य सृजित किया है। इनमें से एक ग्रन्थ "श्राद्ध निर्णय" वेदों के शीर्ष विद्वान पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ जी का रचा हुआ है। उसमें श्राद्ध के सभी पहलुओं पर विस्तार से विचार कर निर्णय किया गया है कि मृतकों का श्राद्ध अन्धविश्वास के अलावा कुछ नहीं है। यह भी बता दें कि हमारे यह पण्डित जी व हम भी पहले पौराणिक परिवारों के रहे हैं जहाँ मृतक श्राद्ध होता था और हमारे सम्बन्धी जो अज्ञान में फंसे हुए हैं, वह अब भी मृतक श्राद्ध करते हैं। अभी तक सनातनी कहे जाने वाले हमारे बन्धुओं ने कोई ऐसा प्रमाण व युक्ति नहीं दी है जिससे श्राद्ध को युक्ति व तर्क से सिद्ध किया जा सके। अतः बुद्धि से विचार कर हमें केवल अपने जीवित माता-पिता व परिवार के सभी वृद्ध जनों जिन्हें हमारा भोजन, वस्त्र, ओषधि वा चिकित्सा आदि के रूप में किसी

अत्यन्त गुणकारी फल 'सेब'

- मधुर प्रकाश शास्त्री



सेब का फलों में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसका ऊपर का छिलका पतला परन्तु कठोर और अन्दर का गूदा मीठा और विशेषतया एक प्रकार के क्षार से युक्त होता है। सेब के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यदि व्यक्ति प्रतिदिन एक सेब खाता रहे तो उसे डॉक्टर की आवश्यकता नहीं रहती। इससे यह स्पष्ट होता है कि सेब कितना गुणकारी फल है।

सेब में जो विशेष क्षार होता है, उसे मैलिक एसिड कहते हैं। यह क्षार विशेष रूप से आंतों, जिगर और मस्तिष्क के लिए उपयोगी माना जाता है। सेब में कार्बोहाइड्रेट की विशेष मात्रा के साथ-साथ कैल्शियम और फास्फोरस की भी मात्रा रहती है। इसमें विशेष रूप से विटामिन-ए, बी, तथा बी काम्प्लेक्स की मात्रा भी पाई जाती है। भोजन में विद्यमान फास्फोरस सामान्य रूप से जलन पैदा करने वाला पदार्थ माना जाता है। भोजन के साथ उसे उचित मात्रा में खाये तो पदार्थ जल्दी पचते हैं। पेट नियम से साफ होने लगता है। इस प्रकार सेब के खाने से आमाशय पुष्ट होने लगता है। सेब बहुत सी बीमारियों को दूर करके स्वास्थ्य ठीक रखने में सहायक होता है।

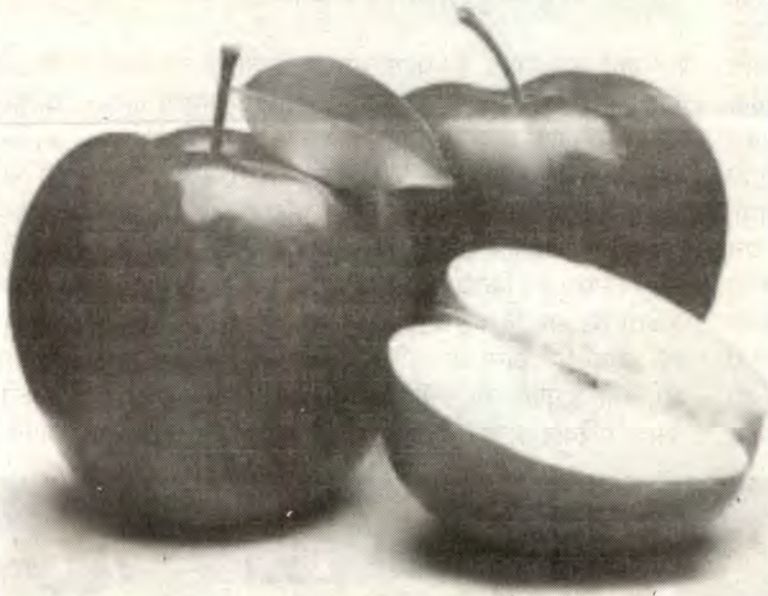
सेब में विशिष्ट औषधियुक्त गुण पाये जाते हैं। इसका कारण इसमें विद्यमान पैक्टीन नामक पोषक तत्व है। इसका विशिष्ट कार्य यह है कि भोजन वाली नली में प्रोटीन को सड़ने से रोकता है तथा 'मैलिक एसिड' नामक क्षार आंतों, जिगर और मस्तिष्क के लिए लाभदायक सिद्ध होता है। इससे कब्ज अपने आप समाप्त हो जाती है।

सेब में विद्यमान औषधीय गुणों की विशेषता यह है कि इससे जहाँ कब्ज समाप्त होती है, वहाँ दस्त भी बन्द होते हैं। दस्त की स्थिति में सेब को भाप पर पकाकर खाना चाहिए।

सेब के महत्वपूर्ण पैक्टीन आदि तत्व इसके छिलके के बिल्कुल नीचे रहते हैं। इसलिए यदि इसे छीलकर खाना हो तो इसका बहुत पतला छिलका उतारना चाहिए। खाने से पूर्व

आवश्यक है कि सेब को भली प्रकार गरम पानी से धो लिया जाए, क्योंकि सेब को कीटाणुओं से बचाने के लिए इस पर कृमि नाशक दवाइयों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए खाने से पूर्व बहुत अच्छी तरह साफ करना बहुत आवश्यक है।

सेब खाने का एक विशेष ढंग यह है कि छिलके समेत छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर इसे एक साफ प्लेट में रखें। तब उस पर गरम पानी इतना डालें जिससे टुकड़े ढक जायें। उसे ढंककर रख दें। पानी ठंडा होने पर साफ हाथों से सेब के टुकड़ों को मसलकर भली प्रकार धो लें और छानकर पी लें। इसके रस में चीनी आदि मिलाने की आवश्यकता नहीं थोड़ी



काला नमक और शहद डालकर पीने से और भी लाभ होता है। इसका विशेष गुण यह है कि यह शरीर के रक्त में सरलता पूर्वक घुल जाता है जिससे हृदय, मस्तिष्क, जिगर और शरीर के प्रत्येक कण को शक्ति और स्फूर्ति प्राप्त होती है। शर्करा की उचित मात्रा इसमें स्वयं विद्यमान होती है। सेब शरीर को ताकत देने वाला और रोगों को दूर रखने में बहुत सहायक सिद्ध होता है।

सेब की विशेषता यह है कि उसका निरन्तर प्रयोग करने से जहाँ कब्ज दूर होता है, वहीं सेब को भाप में पकाकर खाने

से दस्त आदि पेट के रोग भी दूर होते हैं। जिन बच्चों को पतले दस्त लगे रहते हैं, उन्हें सेब का गूदा मसलकर आहार के रूप में थोड़ी-थोड़ी देर बाद देने से दस्त के कारण निर्बल शरीर को भी शक्ति मिलती है।

सामान्य रूप से पेट के रोगियों के लिए सेब औषधि का काम करता है। सलाद के रूप से सेब काटकर उस पर दालचीनी का चुटकीभर चूर्ण अथवा शहद मिलाकर खाने से पेट के रोगियों को आश्चर्यजनक लाभ होता है। पेट के रोगियों के लिए आवश्यक है कि इस प्रकार सेब दिन में दो-तीन बार खाये। शहद अथवा तिल मिलाकर खाने से सेब भूख बढ़ाता है और इससे आमाशय में पाचक रस पैदा होते हैं जिससे भोजन के पोषक रस शरीर में सरलतापूर्वक जञ्ब हो जाते हैं।

दुर्बल और कमजोर व्यक्तियों के लिए सेब बहुत अच्छा शक्तिवर्धक फल है। इसकी विशेषता यह है कि यह शरीर के विभिन्न अंगों की दुर्बलताओं को नष्ट करके शरीर को शक्तिशाली बनाने में सहायक सिद्ध होता है। अन्य फलों अथवा सब्जियों की अपेक्षा इसमें फास्फोरस और लौह तत्वों की अधिकता शरीर और मस्तिष्क को नई शक्ति देती है। क्योंकि इससे कब्ज दूर होता है और शरीर की आधे से अधिक बीमारियाँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

सेब को दूध के साथ लिया जाए तो स्वास्थ्य एवं शक्ति दोनों बढ़ती है और त्वचा पर एक विशेष प्रकार की चमक पैदा हो जाती है। जो व्यक्ति अपने काम अथवा किसी रोग के कारण तनाव की स्थिति में रहते हैं, यदि वे सेब का प्रयोग करें तो उन्हें भी इसका लाभ होगा।

जिन लोगों को अपने कार्य से विशेष उत्साह की वृद्धि नहीं होती, उन्हें सेब के प्रयोग से लाभ होता है। उनकी उदासी दूर होती है और वे प्रसन्न रहने लगते हैं। उन्हें अपने काम धन्धे में रुचि पैदा हो जाती है।

- 2804 आर्य समाज गली, बाजार सीताराम, दिल्ली-6, मो.: -9810431857

वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास सहारनपुर और आर्य समाज खेड़ा अफगान के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता में लगभग पच्चीस विद्यालयों के बच्चों ने भाग लिया। 21 सितम्बर (सोमवार) को आर्य समाज मंदिर खेड़ा अफगान सहित आठ केन्द्रों में यह प्रतियोगिता एक साथ हुई। महाराणा प्रताप उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, आर्य कन्या इण्टर कॉलेज गंगोह, विजय सिंह पथिक हाई स्कूल ढकदेई, महन्त जगन्नाथ इण्टर कॉलेज बान्दुखेड़ी, महाराणा अग्रसेन कन्या विद्यालय नकुड, श्री अजीत सिंह सरस्वती विद्या मंदिर अम्बैहटा, रविन्द्र नाथ टैगोर विद्यापीठ इण्टर कॉलेज नकुड आर्य कन्या जूनियर स्कूल आर्य समाज खलासी लाईन में प्रतियोगिता के केन्द्र थे। लगभग सात सौ विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। आर्य समाज के प्रधान आदित्य प्रकाश गुप्ता ने बताया कि प्राचीन भारत की गौरवमयी संस्कृति रही है। हमारा आर्यावर्त देश सदा से विश्व गुरु रहा है इस प्रतियोगिता का उद्देश्य भारत (आर्यावर्त) को फिर से विश्व गुरु बनाना है ताकि आज की युवा पीढ़ी देश के खोये स्वाभिमान एवं संस्कृति को पुनः स्थापित कर सके।

इस प्रतियोगिता का परिणाम, पारितोषिक नकद एवं साहित्य) स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर 20 दिसम्बर को घोषित होगा। इस अवसर पर कुंवरपाल सिंह आर्य, राजेश कुमार आर्य, रणवीर सिंह, चरन सिंह, शशिकांत, चन्द्रशेखर मित्तल, रविन्द्र कुमार, संजय आर्य, सन्नी कुमार, कुलवन्त सिंह, यशपाल गुप्त, आयुष कुमार, वेद भूषण आदि का विशेष सहयोग रहा। इस प्रतियोगिता में लगभग 50 मुस्लिम बच्चों ने भाग लिया।

- अमित कुमार आर्य, मंत्री आर्य समाज

बदायूं जनपद के ग्राम बारीखेड़ा में सम्पन्न हुआ वैदिक महायज्ञ

आर्य उपप्रतिनिधि सभा बदायूं के उपदेशक पंडित दयाराम वेदपथी के सतत प्रयासों के फलस्वरूप दिनांक 24 सितम्बर, 2015 को उनके पौरोहित्य में बारीखेड़ा में वैदिक महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस महायज्ञ के मुख्य यजमान ग्रामवासी श्री सूरज पाल अपनी धर्मपत्नी सहित रहे।

इस महायज्ञ में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने अपनी-अपनी आहुतियाँ अर्पित कर पुण्य लाभ लिया। महायज्ञ के समापन पर पंडित वेदपथी ने यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यज्ञ एक पवित्रतम कर्म है इसे हमें अपने दैनिक जीवन में अपना अति आवश्यक है, इससे हम असाध्य रोगों से बच सकते हैं। अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि पर नियन्त्रण कर सकते हैं, निसंतान संतान प्राप्त कर सकते हैं। पर्यावरण को विशुद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त कर सकते हैं। उनके मधुर भजन गान एवं उपदेशों ने उपस्थित जन समूह को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने धूम्रपान मांसाहार छुआछूत, दहेजप्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, भ्रष्टाचार, अर्धविश्वासों एवं समाज में फैली अन्य कुरीतियों के निवारण हेतु सबसे सहयोग की अपील की। इस अवसर पर वैदिक साहित्य एवं यज्ञ से सम्बन्धित बनवाये गये आकर्षक फ्लैक्स और ओ३म् के ध्वजों का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम से ग्रामवासी आर्य समाज की ओर विशेष आकृष्ट हुए। आयोजन में हरिसुमिरन लाल, धर्मपाल, महेश चन्द्र, लालाराम एवं पूर्व प्रधान लटूरी लाल का उल्लेखनीय योगदान रहा।

इस कार्यक्रम की ग्राम में भूरि-भूरि प्रशंसा रही।

- ज्ञानदेव आर्य, मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, बदायूं (उ. प्र.)

श्राद्ध पक्ष की सार्थकता

- विमलेश बंसल आर्या



पितृयज्ञ हर घर में होवे, चरण आचरण सायं प्रातः।

सेवा शुश्रूषा कर श्रद्धा, पायें उनका आशीर्वाद।।

चले गए जो इस दुनियाँ से, वंशावली वट वृक्ष बनायें। उनके सुन्दर कार्यों से, बच्चों को अवगत करें सिखायें। पूर्ण करें उनके कामों को, बच्चों को लेकर के साथ।।

सेवा शुश्रूषा

पूर्णिमा से अमावस्या तक, कोई भी दिन न छूटें पूरे वर्ष भर अनुव्रत रहकर, विमल मधुर अमृत लूटें। उत्तम संतति बनकर उनकी, मानें सुन्दर सच्ची बात।।

सेवा शुश्रूषा

सीखें पूर्वजों से अपने, देखें चित्र चरित्रों को। श्रीराम कृष्ण की जय हो जय, नमन श्रवण से पुत्रों को। वीर शिवाजी जैसे सुत बन, धन्य करें अपने पितु मात।।

सेवा शुश्रूषा

श्राद्ध पक्ष की यही सफलता, 365 दिवस मनायें। गए हुआ का मान बढ़ाएँ, जीवन को नित शीश झुकायें। त्याग, समर्पण, श्रद्धा- तर्पण की खुशबू से महका हाथ।।

सेवा शुश्रूषा

पता-329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-65

मो.: - 813 0586002

ई-मेल : vimleshbansalarya69@gmail.com

आर्य समाज की गतिविधियाँ मानव सेवा प्रतिष्ठान के तत्वावधान में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान प्रतिवर्ष मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करता है तथा समाज सेवा में समर्पित विद्वान् विदुषियों का अभिनन्दन करता है। इस वर्ष भी प्रतिष्ठान द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम

दिनांक : 25 अक्टूबर, 2015 को प्रातः 8 से 10 बजे तक
स्थान : दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशवपुरम, दिल्ली-35
अध्यक्षता : श्री आजाद सिंह लाकड़ा, प्रधान जाट मित्र मण्डल
उद्घाटन : डॉ. योगानन्द शास्त्री पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली
विशिष्ट अतिथि : श्री रामस्वरूप आर्य, प्रधान नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी, चौधरी जयभगवान जागलान, चौधरी देवदत्त डबास (प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू. एस. ए.)
आशीर्वाद दाता : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (प्राचार्य, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली)

अभिनन्दन

* आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक (अमृतसर, पंजाब) को स्व. श्री रामपत आर्य इसमाइला

रोहतक हरियाणा स्मृति सम्मान से।

* स्वामी सुधानन्द योगी (योगाश्रम लालपुरा, ऊजोली, अलवर, राजस्थान) को स्व. श्री मास्टर रतन सिंह जी डबास, सुलतानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।

* डॉ. सरिता आर्या प्राध्यापिका, वैदिक कन्या गुरुकुल, ऐंचरा कला, जीन्द, हरियाणा) को श्रीमती लक्ष्मी देवी नोलथा पानीपत हरियाणा स्मृति सम्मान से।

* डॉ. कमलेश आर्या (आर्य सुगन्ध संस्थान, नजीबाबाद, बिजनौर) को स्व. श्रीमती इतवारिया रामदास तिवारी हालैण्ड स्मृति सम्मान से।

* प्रचारक रणजीत जी आर्य, ग्राम गौडपाली, बरगढ़, उड़ीसा को श्रीमती मुख्तयारी देवी बेरी झज्जर हरियाणा स्मृति सम्मान से।

* आचार्य सुमन (साधना) आर्या (पतंजलि आयुर्वेदिक कॉलेज, हरिद्वार) को स्व. श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर (राज.) स्मृति सम्मान से।

* श्री बुद्धदेव शास्त्री (आचार्य गुरुकुल नरसिंह नाथ, बरगढ़, उड़ीसा) को स्व. श्री पं. ऋषि बलदेव तिवारी जी हालैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।

* श्री वेदपाल जी आर्य (पानीपत, हरियाणा) को स्व. श्री राजेन्द्रदेव सिंह, याकुबपुर, झज्जर (हरियाणा) स्मृति

सम्मान से।

* कुमारी पुनम आर्या (पतंजलि सेवाश्रम, गुप्तकाशी, उत्तराखण्ड) को स्व. श्रीमती वेदकौर, याकुबपुर, झज्जर (हरियाणा) स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।

छात्रवृत्ति वितरण

इस शुभ अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के अनेक छात्र-छात्राओं को लाखों रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी।

वक्तागण

स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री कैलाश गहलौत (विधायक दिल्ली सरकार), प्रवीण कुमार आर्य (चेयरमैन फोरसाइट, दिल्ली), श्री जसवीर सिंह मलिक (सम्पादक जाटरल), श्री रणवीर शास्त्री (बवाना), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र.), डॉ. धर्मपाल जी (भू. पू. कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार), मा. रामकुमार गहलावत (सांपला), श्री जसवन्त सिंह देसवाल (झज्जर), श्री मधुर आर्य (दिल्ली)।

- निवेदक, रामपाल शास्त्री (मानव सेवा प्रतिष्ठान)

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में कार्तिक शुक्ल 4 से कार्तिक शुक्ल 11 वि. सं. 2072 तदनुसार 15 नवम्बर से 22 नवम्बर, 2015 तक 8 दिन के क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, इसमें आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविरार्थी 15 नवम्बर को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें। शिविर समापन 22 नवम्बर को मध्याह्न लगभग 1 बजे होगा।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जायेगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः 4 से 9.30 बजे तक रहेगी।

शिविर शुल्क 1000 रुपये कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करावें।

नाम : क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर 2015

खाता संख्या-01790100018052

शाखा बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा (जिला-अरवल्ली)

IFSC No.- BARB0DHANSU

अहमदाबाद एस.टी. बस स्टैंड से धनसुरा, मोडासा की ओर जाने वाली बस में बैठकर रोजड़ गाँव उतरें। यहाँ से पुंसी रोड पर लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर आर्यवन है। अहमदाबाद से आर्यवन (रोजड़) लगभग 70 किलोमीटर दूर है।

विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

पत्र व्यवहार का पता : वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जिला-साबरकांठा (गुजरात)-383307

दूरभाष:-02770-287417, 291555, मो.:-9427059550

E-mail : vaanaprastharoad@gmail.com, web.:

www.vaanarastharoad.org

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की कामना के साथ मनाई पुण्य तिथि

जयपुर : नगर के मानसरोवर क्षेत्र में एक ऐसा भी वैदिक परिवार है जो अपने आत्मीयजन की जन्म एवं पुण्य तिथियाँ पौराणिक कर्मकाण्ड की कुरीति से दूर बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के उद्देश्य से मनाता है। सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान जयपुर के संरक्षक एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, राजस्थान के अध्यक्ष यशपाल 'यश' ने अपने पिता श्री लक्ष्मी नारायण जी की 16वीं पुण्यतिथि विश्वशांति यज्ञ, स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं 16 औषधीय वृक्ष लगाकर मनाई। पुत्र डॉ. प्रमोद पाल पवन आर्य तथा दीपांकर यश ने भी रक्तदान में भाग लिया।

इस अवसर पर विशिष्ट जन एवं अन्य अनेक प्रतिभाएँ विद्यमान थीं।

- ईश्वर दयाल माथुर

जिन परिवारों में वृद्धों का सम्मान होता है वहाँ सुखों की वर्षा होती है

- ओम प्रकाश आर्य

'वरिष्ठ नागरिक सम्मान दिवस' पर स्थानीय महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर में श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया।

तत्पश्चात् आर्य महिला परिषद् की अध्यक्ष सुलोचना आर्या एवं मीना पसाहन के द्वारा वृद्धों के सम्मान में भजन गाये गये। जिसे सबने सराहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति में यज्ञ जीवन का आधार है। नित्य प्रतिदिन परिवारों में पंच महायज्ञों के माध्यम से पितृयज्ञ के द्वारा प्रतिदिन बड़ों के सम्मान का प्रशिक्षण दिया जाता है बड़ों को भोजन कराने के बाद ही अन्य परिवार के सदस्य भोजन करते हैं। बड़ों को हर तरह सन्तुष्ट करना प्रमुख कर्तव्य माना जाता है। आज हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होने के कारण इन श्रेष्ठ विचारों से दूर होती जा रही है। जिसके परिणाम स्वरूप आज आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद घर के बड़े बुजुर्ग वृद्ध घरों की तरफ अग्रसर हो रहे हैं। श्री आर्य ने उपस्थित लोगों को प्राचीन जीवन पद्धति और वैदिक संस्कृति को घर-घर पहुँचाने की शिक्षा दी।

इस अवसर पर विजय कुमार आर्य, नीलम पसाहन, आचार्य दयानन्द शास्त्री, अनु, अंजलि आदि उपस्थित थे।

-दयानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य (गर्हि वयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
3100/- रुपये (10 खण्ड, 9 जिल्दों में) भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठाये। ढाक व्यव 225/- रुपये अलग से भेजा होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम बैंक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'दयानन्द भवन' 315 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक कर सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 'दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002



ज्ञानी भक्त और विषयसक्त

यो अस्मै घंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनाति भवति द्युमाँ अह।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मधवा यः कवासखः॥

—ऋ० ५/३४/३

ऋषिः—संवरणः प्राजापत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—जगती॥

विनय—मैं इन दो प्रकार के आदमियों में से कौन—सा हूँ? क्या मुझे दिन—रात भगवान् के भजन में मस्त रहने में आनन्द आता है? क्या मैं चौबीस घण्टे उसके भजन में लीन रहता हूँ। चौबीस घण्टे न सही, क्या मैं दिन—रात में से एक घण्टा भी भगवान् के प्रति अपना हार्दिक प्रेमरस पहुँचाने में बिताता हूँ? अथवा मैं 'ततनुष्टि' हूँ? दिन—रात विषयों में फँसा रहता हूँ? न खत्म होनेवाले विषयों की तृप्ति में लगा रहता हूँ? स्वार्थ के लिए धन कमाने की चिन्ता में और धन के लिए दूसरों के क्लेशों की कुछ परवाह न करके और धोखा—फरेब भी करके उनके चूसने की नाना नयी—नयी तरकीबें सोचने और करने की फिक्र में तो कहीं मेरे दिन—रात नहीं बीतते हैं? क्या अपने शरीर की शोभा बढ़ाने, संवारने, शृंगार करने में ही जीवन के अमूल्य समय के प्रतिदिन कई घण्टे मैं नहीं खो रहा हूँ? क्या मैंने अपने अन्दर के मानसिक शरीर को भी बलवान्, स्वच्छ और सुन्दर (पवित्र) करने का भी कभी यत्न किया है? इसके लिए समय दिया है? मेरे साथी—संगी कैसे लोग हैं? कहीं मेरे इर्द—गिर्द बुरे आचरण वाले लोग तो इक्कट्टे नहीं हो गये हैं? कहीं मैं कुत्सित कर्म करने वाले दुष्ट—मनुष्यों से (जो

ऊपर से आकर्षक होते हैं) मिलने—जुलने में आनन्द तो नहीं पाता हूँ? अहो, उस सर्वशक्तिमान्—इन्द्र के नियम अटल है, मैं जैसा करूंगा वैसा ही मुझे भरना पड़ेगा। मैं तेजस्वी बनूंगा या मेरा विनाश होगा? भगवान् तो दिन—रात—सोम—सवन करने वालों को तेजस्वी बना रहा है और विषय—ग्रस्त पुरुषों का नाश कर रहा है।

शब्दार्थ—यः=जो घंस उत वा यः ऊधनि=दिन होवे या रात सदैव ही जो अस्मै=इस परमेश्वर के लिए **सोमं सुनोति**=ज्ञानपूर्वक भक्ति में रहता है, यजन करता है **अह द्युमान् भवति**=वह निश्चय से तेजस्वी (प्रकाशवान्) हो जाता है और इसके विपरीत **ततनुष्टिम्**=विषयों में दिनों—दिन फँसते जाने वाले को स्वार्थरत अजयनशील को **तनूशुभ्रम्**=शरीर की सजावट—बनावट में लगे रहने वाले को **यः कवासखः**=और जो बुरी संगत में रहने वाला है, जिसके कि यार—दोस्त कुत्सित—कर्मा लोग हैं, उस पुरुष को भी **शक्रः मधवा**=सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्य वाला इन्द्रदेव **अप ऊहति**=मिटता देता है, विनाश कर देता है।

साभार—'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटारें :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

**वैचारिक क्रान्ति के लिए
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।**

पौराणिक समाज में फैली अवैदिक परम्पराओं में मृत्यु के उपरान्त दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु 'गरुड़ पुराण' की कथा का प्रचलन आम हो गया है। पुराणों के जाल में हिन्दू समाज इस कदर उलझ गया है कि वेदादि शास्त्रों के प्रति उसकी रुचि, विश्वास और श्रद्धा निरन्तर ह्रास को प्राप्त हो रही है और जीवन अवैदिक औपचारिकताओं के बोझ के नीचे दबता चला जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक "शाश्वत जीवन" जिसने एक अनमोल निधि के रूप में आकार लिया है और हिन्दू समाज में व्याप्त आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास की पोल खोलकर रख दी है।

"शाश्वत जीवन" का आद्योपान्त अवलोकन करने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि एक मिथ्या अवधारणा के विकल्प में तथा वेदादि शास्त्रों के आलोक में लिखी गई यह पुस्तक असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने में पूर्ण समर्थ है तथा रूढ़ियों, आडम्बरों और अन्धविश्वासों के रूप में जो केंचुली हमारी प्राचीन परम्परा, ज्ञान और विज्ञान को ढंके हुए है उस केंचुली को विद्वान् लेखक ने उतार फेंका है। अनेक अन्य वैदिक ग्रन्थों के उद्धरण प्रस्तुत कर तथा अनेकों मनीषियों के प्रवचनों का सार देकर "गरुड़ पुराण" परलोक का सत्य नहीं है सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है।

सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. लक्ष्मणदास आर्य के स्वाध्याय प्रेमी विद्वान् पिताश्री स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती जी (मूलचन्द्र आर्य) ने अपने

पुस्तक समीक्षा

जीवन काल में इस पुस्तक का प्रणयन किया था जो किन्हीं कारणों से उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थी। लेकिन उनके सुयोग्य सुपुत्र जो कि अत्यन्त निष्ठावान् कर्मठ, जुझारू, जागरूक और सक्रिय आर्य समाजी है के विशेष प्रयासों से इस पुस्तक का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कराया है। इस समाजोपयोगी पुस्तक को सामने लाने में उनका प्रयास प्रशंसनीय है अतः उन्हें साधुवाद देता हूँ। बहुरंगी आवरण में 184 पृष्ठ की "शाश्वत जीवन" नामक पुस्तक जो अत्यन्त अल्प मूल्य मात्र 100/- रुपये में प्राप्त होगी, आत्मविद्या के जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी तथा समाज को उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लायेगी ऐसी आशा करता हूँ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

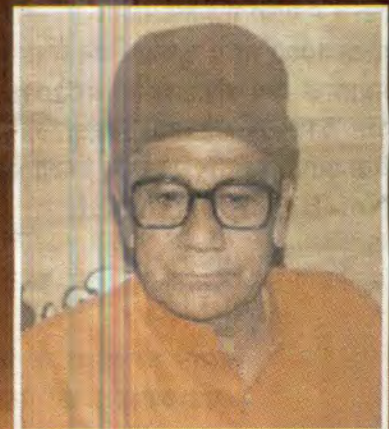
1. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

2. डॉ. लक्ष्मण दास आर्य, लक्ष्मण रेडियो, स्टेशन रोड, जिला-अशोक नगर-473331 (मध्य प्रदेश)

मो. : 9425133481

- स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

शाश्वत जीवन



स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।